ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 105-106

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

भारतीय नारीः संघर्ष से सफलता तक

यशी कौशिक

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, उदय प्रताप कालेज वाराणसी (उ0प्र0), भारत

Received- 16.01.2022, Revised- 20 .01. 2022, Accepted - 24.01.2022 E-mail: yashikaushik111@gmail.com

सारांशः – *भारतीय नारी इस शब्द को सुनते ही जेहन में जो एक तस्वीर उभरती है वो सामान्यतः घर ही दहलीज के भीतर काम करने वाली महिला जैसे पत्नी, मां, बहन अथवा बेटी की होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 6 दशक बाद भी हम भारतीय नारी को इसी रूप में देखते हैं हालांकि अब भारतीय महिलाओं के पंख आसमान की बुलन्दियों को चूम रहे हैं। आज भारतीय महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत और बुलंदी का परचम लहरा रही है। घरेलू कामकाज से लेकर खेलकूद, राजनीति, व्यापार, ऑफिस मैनेजमेण्ट, इंजीनियरिंग सेक्टर, यहां तक की रक्षा क्षेत्र में भी भारतीय नारियां पुरूषों से कदमलात करती दिख रही हैं लेकिन भारत की नारी का ये सफर आसान नहीं रहा है। आजादी से पहले और आजादी के दशकों बाद तक भारतीय महिलाओं को घरों से बाहर निकल कर पढ़ने–लिखने, खेलने–कूदने और पुरूषों की तरह नौकरी के तमाम क्षेत्रों में काम करने की आजादी नहीं थी, उन्हें तमाम तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता था लेकिन भारतीय नारी ने धीरे–धीरे ही सही तमाम दिक्कतों और विपरीत परिस्थितियों से लड़कर वो मुकाम हासिल कर लिया जब वो पुरूषों के बराबर खड़ी दिख रही है।*

कुंजीभूत शब्द– तस्वीर, स्वतंत्रता प्राप्ति, भारतीय नारी, पंख आसमान, बुलन्दियों, काबिलियत, परचम लहराना ।

यह एक शाश्वत सत्य है कि आज मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी करूणा, ममता और स्नेह से प्रभावित कर रही है नारी। क्योंकि नारी एक भावना है नारी एक एहसास है, नारी त्याग है, तपस्या है, नारी सेवा है, फूंक से ठंडा किया हुआ कलेवा है। नारी आस्तित्व की वह आत्मा है जो अच्छे बुरे में फर्क कर हमें अपनी तरह बना देती है। जब विश्व का आभा मण्डल विराट उद्घोष करता है तब जन्म होता है नारी का। नारी वो है जो समय के साथ बदलती है, कभी मां के रूप में तो कभी बहन, कभी पत्नी और बेटी के रूप में। कभी–कभी तो समय को थाम भी लेती है नारी। हमारे भारतीय समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार दिये जाते है और वो संस्कार उसे सहेजकर रखना होता है। जैसे धीरे बोलो, किसी के सामने ज्यादा नहीं हंसना, गंभीर बनो यानी समझदार बन कर रहना। हमारा पुरूष प्रधान देश क्यूं नहीं समझता कि नारी प्रकृति की अनमोल उपहार है। उसके मन में कुछ कोमल संवेदनाएँ होती है जो उसे खूबसूरत बनाती है। वो ममता का एक रूप है और इस ममता रूपधारी को हर रूप में हमेशा छल कपट ही मिला है परन्तु आज की नारी इन सब बातों को छोड़कर काफी आगे निकल गई है। आज भारतीय नारी को संविधान द्वारा समानता का अधिकार प्रदान किया गया है। इससे पूर्व नारी को पुरूष ने अपने समान नहीं समझा था। आज नारी को न केवल मतदान करने का ही अधिकार दिया गया है, अपितु उसे हर क्षेत्र में बड़े से बड़े पद पर आसीन होने का समान अधिकार है। आज नारी पुरूष के समान ग्राम पंचायत, जिला परिषद, नगर परिषद, विधानसभा, लोकसभा आदि सभी छोटे–बड़े चुनाव में भाग ले सकती है। इसी प्रकार सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में भी महिलाओं को समानता का अधिकार प्राप्त है। इससे महिला समाज में न केवल आत्मसम्मान बढ़ा अपितु उनमें नवचेतना भी जागृत हुयी है। जिसके बल पर महिला वर्ग आज नये लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है। उसने अपनी शक्ति को पहचान लिया है। मौजूदा दौर में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता का लोहा मनवाया है। वे आत्मविश्वास से भरपूर है। संयम व धैर्य की प्रतिमूर्ति है तो इरादे भी मजबूत व बुलंद है। स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ रही आज की नारी ने अपनी काबिलियत के दम पर हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। सामाजिक कुरीतियों के दायरे से आगे आज की नारी सफलता के नये–नये कीर्तिमान गढ़ रही है। पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं ने हर कदम पर अपने दम पर अपनी श्रेष्ठता को हर जगह साबित करके दिखाया है। हालांकि उनका मानना है कि यदि परिवार व समाज का साथ मिले तो महिलाएं और अधिक ऊंचाइयां छू सकती हैं। आज की महिला चूल्हे–चौके की मानसिकता के दायरे से बाहर आ रही है। प्रशासनिक क्षेत्र में महिलाएं आगे आई है तो खेल के क्षेत्र में भी महिलाओं ने समूचे विश्व में अपना नाम कमाया है। समाज के कई अवरोधों और शोषण के विरूद्ध आशा की किरण लिए समय–समय पर कई महिलाएं अपनी बेहतरी हेतु सक्रियता से आवाज उठाती रही हैं।

कवयित्री मीराबाई जिन्होंने समाज की रूढ़िवादी सोच के विरूद्ध आवाज उठायी, कस्तूरबा गांधी ने महात्मा गांधी का बायां हाथ बनकर देश को आजाद करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंदिरा गांधी ने अपने दृढ़ संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया तथा 1966 में पहली महिला प्रधानमंत्री बनी, इसी प्रकार प्रेम माथुर प्रथम महिला व्यावसायिक पायलट, सन् 1997 में मदर टेरेसा को पहली महिला नोबेल शांति पुरस्कार मिला, सन् 1997 में कल्पना चावला

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

ने पहली महिला अंतरिक्ष यात्री बन कर हमें गौरवांन्वित किया, वर्ष 2007 में देवी प्रतिभा सिंह पाटिल ने पहली महिला राष्ट्रपति बन सम्पूर्ण देश का संचालन किया। साल 2009 में मीरा कुमार लोकसभा अध्यक्ष बनी। वर्ष 2017 में निर्मला सीतारमण पहली पूर्णकालिक महिला रक्षा मंत्री बनी आदि कुछ प्रसिद्ध महिलाओं ने अपने मन, वचन और कर्म से सारे जगत में अपनी एक विशिष्ट स्थान बनाया तथा अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत ही नहीं बनी बल्कि इस बात का प्रमाण भी दिया कि मौका मिलने पर महिलाएं हर काम को करने में सक्षम है।

आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागृत एवं सक्रिय हो चुकी है वह अपनी शक्तियों को जानने लगी है जिससे आधुनिक नारी का वर्चस्व बढ़ा है। इसके साथ बदलते समाज में भारतीय नारी की साक्षरता दर लगातार बढ़ती जा रही है परन्तु पुरूषों की साक्षरता दर से अब भी कम है। आजादी के इतने सालों बाद भी एक बड़ी संख्या में लड़कियां और बच्चियां अपनी शिक्षा को पूरा नहीं कर पाती हैं। ग्रामीण या गरीब परिवारों की लड़कियां या फिर किसी पारिवारिक समस्या की वजह से बड़ी संख्या में लड़कियां छोटी या अल्प उम्र में ही स्कूल छोड़ने को मजबूर हो जाती है। महिला शिक्षा पर सरकार विशेष ध्यान दे रही है इसका प्रभाव यह है कि कल तक जो नारी पुरूष से अलंकृत होती थी आज वह अपनी परम्परागत छवि को बदलकर एक निर्णायक शक्ति के रूप में समाज के समक्ष उसकी हर सीमा को चुनौती दे रही है, चाहें वह राजनीतिक क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र हो, व्यावसायिक क्षेत्र हो या वो सेना का ही क्षेत्र हो हर एक क्षेत्र में सफलता का झंडा गाड़ रही है। सामान्य धारणा के विपरीत नारियों का एक बड़ा तबका कामकाजी है। साफ्टवेयर उद्योग में 30 फीसदी महिला कर्मचारी हैं। पारिश्रमिक तथा कार्यस्थल के मामलों में पुरूष सहकर्मियों के साथ बराबरी पर हैं महिलाएं। ग्रामीण तथा कृषि एवं संबंधित क्षेंत्रो ने महिला श्रमिकों को अधिकतम 89.50 फीसदी रोजगार दिया है। फोब्स मैगजीन की सूची में जगह बनाने वाली दो भारतीय महिला ललित गुप्ते और कल्पना मोरपारिया भारत के दूसरे सबसे बड़े बैंक को संचालित करती हैं और देश की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। ये पंक्तियां भी नारी समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान देती है–

रात नहीं ख्वाब बदलता है, मंजिल नहीं कारवां बदलता है। जज्बा रखो बढ़ने का एक दिन, वक्त भी जरूर बदलता है।

नारी को सुरक्षा तथा आरक्षण देने के लिए हमारे संविधान में वर्ष 1997 में सर्वोच्च न्यायालय ने यौन उत्पीड़न के कड़े नियम बनाये तथा दण्ड का भी प्रावधान किया। एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया भर में होने वाले बाल–विवाह का 40 प्रतिशत अकेले भारत में होता है। भ्रूण हत्या तथा घरेलू हिंसा पर रोकथाम के लिए 26 अक्टूबर 2006 में महिला संरक्षण एक्ट भी लाया गया है। 22 अगस्त 2017 को सर्वोच्च न्यायालय की पांच जजों वाली बेंच ने तीन तलाक जैसी कुरीतियों तथा रूढ़िवादी विचार पर प्रतिबन्ध लगाकर मुस्लिम समाज को एक नई दिशा प्रदान की है।

निष्कर्ष– जब तक नारी स्वयं में बदलाव नहीं करेगी तब तक वह पराधीन ही रहेगी। आज समस्या यह नहीं है कि उसे स्वयं के प्रति पुरूष या समाज का दृष्टिकोण बदलना हैं बल्कि स्वयं की दृष्टिकोण में बदलाव की जरूरत है। साथ ही नारियों के बेहतरीकरण के लिए हम सबको अपनी कुत्सित एवं रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। उन्हें सम्मान के साथ–साथ शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी व अन्य स्थानों पर बराबरी देनी होगी। भारतीय नारी देश की उन्नति में अपना अधिकाधिक योगदान देकर राष्ट्र को शिखर पर पहुंचाने हेतु सदैव तत्पर रही है। वास्तविकता तो यही है कि नारी शक्ति ही देश और सामाजिक धुरी का वास्तविक आधार है। महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही नीतियों में पूर्ण सहयोग देकर उसको परिणाम तक पहुंचाना होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. m.jagaran.com
2. www.hindigurujee.com
3. RAJASTHAN PATRIKA Patrika.com.cdn.ampproject.org, 12 March 2021
4. उसके हिस्से की धूप के संदर्भः आधुनिक नारी आत्मसार्थकता की तलाश में निता समाद्दर पृष्ठ सं0 26–29
5. समाज में बिखरते परिवार की प्रसादः सुरेन्द्र वर्मा के नाटक द्रौपदी पर आधारित। निता समाद्दर, पृष्ठ सं0 593 संस्करण अप्रैल 2019
6. स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014
7. जोशी, पुष्पा (1988) गांधी आन वोमेन, सेण्टर फार वोमन्स डेवलपमेण्ट स्टडीज, दिल्ली
8. सिंह करण बहादुर, महिला अधिकार व सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र, मार्च 2006

*****